राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
माध्यमिक पाठ्यक्रम : हिंदुस्तानी संगीत
पाठ 7 : संगीत रत्नाकर का संक्षिप्त परिचय
कार्यपत्रक - 7

1. पं. शारंगदेव द्वारा लिखित संगीत रत्नाकर का अन्य नाम बतायें। इस नाम का कारण स्पष्ट कीजिये ।
2. पं. शारंगदेव द्वारा लिखित संगीत रत्नाकर भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक ऐसा ग्रंथ है जो हिन्दुस्तानी तथा कर्नाटक दोनों पद्धतियों में आधार के रूप में मान्य है'। इस कथन का औचित्य अपने शब्दों में सिद्ध कीजिये ।
3. संगीत रत्नाकर के अनुसार मार्ग और देशी संगीत के मध्य अंतर स्पष्ट कीजिये ।
4. संगीत रत्नाकर के दूसरे अध्याय में दशविध राग वर्गीकरण दिया गया है। मार्ग तथा देशी रागों के अनुसार इस वर्गीकरण को स्पष्ट कीजिये ।
5. 'पं. शारंगदेव कृत संगीत रत्नाकर संस्कृत में लिखित संगीत का एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है'। इस कथन का अपने शब्दों में औचित्य स्पष्ट कीजिये ।
6. संगीत रत्नाकर के अनुसार निबद्ध गान के लिये दी गयी तीन संज्ञाओं की पहचान कीजिये ।
7. अवनद्य और घन वाद्य की तुलना करें। वाद्यों के दोनों प्रकारों का एक उदाहरण दीजिये ।
8. संगीत रत्नाकर में वर्णित विभिन्न प्रकार के रागों की कुल संख्या का उल्लेख कीजिये ।
9. पं. शारंगदेव के अनुसार शुद्ध और विकृत स्वरों की कुल संख्या का उल्लेख कीजिये ।
10. संगीत रत्नाकर के तीसरे अध्याय में विविध विषयों का उल्लेख है। इस अध्याय के नाम की पहचान कीजिये तथा इसमें वर्णित किसी एक विषय का वर्णन कीजिये ।